राष्ट्रीय–संगोष्ठी की रूपरेखा

'राष्ट्रीय एकात्मता एवं भारतीय संस्कृति'

स्थान : इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र सभागार

दिनांक : 15 –17 जून, 2017

प्रथम दिवस (15 जून, 2017) :

उद्घाटन सत्र (अपराह्न 04:00 से प्रारंभ)

स्वागत, सरस्वती वंदना एवं दीप प्रज्ज्वलन।

विशेष व्याख्यान (अपराह्न 06:00 से प्रारंभ) :

'राष्ट्र की अवधारणा'

द्वितीय दिवस (16 जून, 2017)

प्रथम सत्र (पूर्वाह्न 10:00 – 11:30) :

'भारतीय कला एवं राष्ट्रीयता'

द्वितीय सत्र (अपराह्न 12:00 – 01:30) :

'भूमंडलीकरण एवं राष्ट्रीयता'

तृतीय सत्र (अपराह्न 02:30 – 04:00) :

'राष्ट्र के पुनरुत्थान में भारतीय भाषाओं एवं साहित्य का योगदान'

चतुर्थ सत्र (अपराह्न 04:30 – 06:00) :

'अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता एवं भारतीय जन–संचार माध्यम'

तृतीय दिवस (17 जून, 2017)

प्रथम सत्र (पूर्वाह्न 10:00 – 11:30) :

'राष्ट्रीयता एवं भारतीय शिक्षा प्रणाली'

द्वितीय सत्र (अपराह्न 12:00 – 01:30) :

'राष्ट्रीयता का आधार : एकता में अनेकता'

तृतीय सत्र (अपराह्न 02:30 – 04:00) :

'राष्ट्रीय एकात्मता एवं भारतीय राजनीति'

समापन सत्र (अपराह्न 04:30 से प्रारंभ)

संगोष्ठी संरक्षक :

श्री अतुल कोठारी, सचिव, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली

एवं

डॉ॰ सच्चिदानंद जोशी, सदस्य–सचिव,
इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली

संगोष्ठी हेतु आयोजन–समिति :

संयोजकः डॉ. सुधीर लाल : 9868229069

मनीष : 9013002325

अरुण कुमार : 9013051165

वेबसाइट: www.ignca.nic.in

ईमेल: bhaviprayojana@gmail.com

फेसबुक: Facebook: www.facebook.com/IGNCA;

ट्विटर: Twitter: @igncakd

उत्तरापेक्षी: +91-11-2338063

भारत विद्या प्रयोजना

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

तथा

शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास

के संयुक्त तत्त्वावधान में

राष्ट्रीय–संगोष्ठी

'राष्ट्रीय एकात्मता एवं भारतीय संस्कृति'

दिनांक : 15–17 जून, 2017

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

सभागार, सी॰ वी॰ मेस, जनपथ, नई दिल्ली – 110001

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र (आई॰जी॰एन॰सी॰ए) की स्थापना वर्ष 1987 में संस्कृति मंत्रालय के अधीन कला के क्षेत्र में बहुविध एवं बहु–आयामी अनुसंधान, प्रकाशन एवं सही सन्दर्भों में कलाओं का प्रचार–प्रसार करने वाली एक स्वायत्त संस्था के रूप में की गई है। आई॰जी॰एन॰सी॰ए ने अपनी कार्य–पद्धति द्वारा तत्संबंधी अधिदेश को पूरा किया है और उसके द्वारा इस दिशा में कार्य निरन्तर जारी है। आई॰जी॰एन॰सी॰ए की निम्नलिखित छः कार्यात्मक इकाइयाँ हैं –कलानिधि, कलाकोश, जनपद–सम्पदा, कलादर्शन, सांस्कृतिक सान्यान्त्रिक संचार तथा सूत्रधार। आई॰जी॰एन॰सी॰ए में रॉक आर्ट, कंजर्वेशन तथा मीडिया लैब आदि इकाइयाँ अपने–अपने क्षेत्र में गुणवत्ता के लिए जानी जाती हैं। आई॰जी॰एन॰सी॰ए के भारत में तीन क्षेत्रीय केन्द्र बंगलुरू, वाराणसी तथा गुवाहाटी में अवस्थित है। त्रिसूर, रांची, पांडिचेरी, गोवा, वडोदरा एवं श्रीनगर में इसके नए केंद्र खोले जाने प्रस्तावित हैं। वर्तमान में न्यास के अध्यक्ष श्री रामबहादुर राय हैं। केन्द्र की भारत विद्या प्रयोजना का उद्देश्य इंडोलोजी के अध्ययन को भारतीय परिप्रेक्ष्य से पुनर्सन्दर्भित एवं पुनर्व्याख्यायित करना है। साथ ही इस प्रयोजना का लक्ष्य विषय–विद्वानों, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर संगोष्ठियों, कार्यशालाओं एवं व्याख्यानों के माध्यम से भारत विद्या के उद्घाटित एवं अनुद्घाटित विभिन्न विषयों पर नूतन विमर्श प्रस्तुत करना है।

शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास : भारत की शिक्षा–प्रणाली में नए विकल्प देने हेतु 24 जुलाई, 2007 को 'शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास' का गठन किया गया। न्यास ऐसा प्रयास करती है कि देश की शिक्षा भारत की संस्कृति, प्रकृति एवं प्रगति के अनुरूप हो। देश की शिक्षा का प्रारूप इस प्रकार बने कि इसके माध्यम से छात्रों का समग्र विकास हो तथा वे छात्र देश के समुचित विकास में अपनी भूमिकाओं का निर्वहन करें। इस हेतु शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के द्वारा निम्नांकित प्रयास प्रारंभ किए गए गए हैं। चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व का समग्र विकास तथा मूल्य आधारित शिक्षा, पर्यावरण शिक्षा, वैदिक गणित का प्रचार–प्रसार, मातृभाषा में शिक्षा (भारतीय भाषा), प्रबंधन शिक्षा में भारतीय दृष्टि, शिक्षक शिक्षा, तकनीकी शिक्षा आदि। शिक्षा क्षेत्र में इस दिशा में किए जा रहे सकारात्मक कार्यों को देश की जनता विशेषतः शिक्षा–क्षेत्र से जुड़े लोगों तक इन बातों को पहुंचाने के लिए 'शिक्षा उत्थान' नाम से द्विमासिक पत्रिका का प्रकाशन भी किया जा रहा है। वर्तमान में अध्यक्ष श्री दीनानाथ बत्रा तथा सचिव श्री अतुल कोठारी के कुशल मार्गदर्शन में शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास अपने उद्देश्यों का सफलतापूर्वक क्रियान्वयन कर रहा है।

अवधारणा–पत्र

राष्ट्रीयता भारत की एकता और अखंडता के लिए अति आवश्यक तत्व है। भारत के संदर्भ में राष्ट्रीयता अथवा राष्ट्रवाद क्या है? यह प्रश्न हमें प्रायः चिंतन के लिए बाध्य करता है। सदियों से विविधता में एकता भारत की पहचान रही है। किन्तु यह तथ्य सच में आश्चर्यजनक है कि कश्मीर से कन्याकुमारी तथा गुजरात से अरुणाचल प्रदेश तक अनन्य विविधताओं से भरा भौगोलिक प्रदेश एक राष्ट्र है। इस अत्यधिक विविधता के मध्य एकता का वह सूत्र कौन सा है जिसके कारण हम भारत के लोग संगठित होकर एक समृद्ध राष्ट्र के रूप में खड़े हैं। निश्चय ही वह सूत्र राष्ट्रीयता की भावना है। स्वतंत्रता आन्दोलन और उससे भी पूर्व से लेकर समकालीन समय तक राष्ट्रीयता ही वह सूत्र है जिसने भारत की एकता और अखंडता को बहुत हद तक अक्षुण्ण बनाए रखा है। इसी हेतु राष्ट्रीयता के विभिन्न आयामों पर व्यापक विचार–विमर्श के लिए इस राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है।

वर्तमान समय में अधिकतर लोगों के द्वारा राष्ट्र, राज्य एवं देश को पर्यायवाची शब्द मानकर प्रयोग किया जा रहा है, इसलिए राष्ट्र के मूल भाव को समझने से पूर्व देश एवं राज्य की अवधारणा पर विमर्श आवश्यक है। वस्तुतः देश एक भौगोलिक इकाई है जहाँ लोग निवास करते हैं। वहीं उस जनसमूह के शांतिपूर्ण जीवन हेतु न्याय, शासन व्यवस्था तथा बाह्य आक्रमणों से सुरक्षा हेतु की गई वैधानिक व्यवस्था उस देश को राज्य बनाता है, जो कि एक राजनीतिक इकाई है। इन दोनों से विशिष्ट राष्ट्र एक सांस्कृतिक इकाई है जहाँ निवास करने वाले लोग उस भूमि को मातृभूमि के रूप में स्वीकार करते हैं। राष्ट्रीयता मूलतः एक भाव है जिसके कारण एक निश्चित भूभाग पर रहने वाला जनसमूह एकता में विविधता को महत्व देते हुए आध्यात्मिक जीवन शैली को अपनाकर एक संस्कृति का विकास करता है।

राष्ट्रीयता एक ओर भारत की कई समस्यायों का समाधान है तो दूसरी ओर कई समस्याएं भारत की राष्ट्रीयता को चुनौती भी प्रदान कर रही हैं। उदाहरण के लिए राष्ट्रीयता भारत में स्थानीय विषमताओं से उपजे क्षेत्रवादी असंतोष का समाधान है। वहीं कश्मीरी अलगाववाद हमेशा से ही भारतीय राष्ट्रीयता के समक्ष चुनौती प्रस्तुत करता रहा है। जाति के आधार पर बँट जाने के बावजूद भारतीय समाज स्वतंत्रता आन्दोलन के समय से ही राष्ट्र एवं राष्ट्रीयता के नाम पर संगठित होता आया है। सांप्रदायिक वैमनस्यता पर प्रायः राष्ट्रीयता भारी पड़ती है। इस प्रकार हमें भारत की कई समस्याओं को संबोधित इस राष्ट्रीयता पर व्यापक विचार–विमर्श करने की आवश्यकता है।

भारत की एकात्मता को अक्षुण्ण बनाए रखने और उसे अत्यधिक सुदृढ़ बनाने के लिए भारत में राष्ट्रीयता की भावना को और अधिक बलवती बनाने की आवश्यकता है। भारत के विभिन्न हिस्सों में अलगाववादी आन्दोलन हों या जाति, धर्म, क्षेत्र, भाषा आदि के आधार पर विखंडित भारतीय समाज; इन समस्याओं का समाधान राष्ट्रीयता ही है। भारत के संविधान की प्रस्तावना में भले ही देश की 'एकता और अखंडता' को अक्षुण्ण बनाए रखने का संकल्प लिया गया हो परन्तु लोकतान्त्रिक प्रणाली में सत्ता की होड़ में प्रायः सभी राजनीतिक दलों ने भारत को संगठित करने के स्थान पर किसी न किसी रूप में विखंडित ही किया है; चाहे वह विभाजन भौतिक स्तर पर हो अथवा मानसिक स्तर पर। भारत की 'एकता और अखंडता' की अक्षुण्णता के लिए कृत–संकल्पित तथाकथित 'धर्मनिरपेक्ष भारतीय राजनीति' ने भारतीय जनमानस को सामजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, क्षेत्रगत आदि प्रायः सभी आधारों पर खंडित ही किया है। कारण स्पष्ट है– वोट–बैंक की विभाजनकारी राजनीति।

इस देश में राज्यों के सामान्य प्रशासनिक विभाजन के लिए खूनी संघर्ष तक हुए हैं। इसे सामान्य प्रशासनिक विभाजन मानकर एक मत्त्वपूर्ण समस्या की ओर से हम अपना मुंह नहीं मोड़ सकते। अनेक बुद्धिजीवियों के द्वारा बार–बार जोर देकर भारत को एक बहुसांस्कृतिक राष्ट्र बताना, भारत के प्रत्येक प्रशासनिक राज्यों को भिन्न–भिन्न राष्ट्रीयता मानना; भारतीय राष्ट्रीयता को भीतर से खोखला करने का षड्यंत्र है। इस प्रकार का चिंतन एवं राजनीतिक व्यवहार भारतीय एकात्मता पर नकारात्मक प्रभाव डालता है तथा भारतीय एकात्मता के आंतरिक एवं बाह्य शत्रुओं को अखंड भारत राष्ट्र की संकल्पना के विरोध में एक पुख्ता तर्काधार उपलब्ध करवाता है। प्रथमतः इस तरह के तमाम प्रयासों पर वैधानिक रूप से पूर्णविराम लगाने की आवश्यकता है। साथ ही, इन षड्यंत्रों के समानान्तर एक वैकल्पिक चिंतन को समृद्ध करने की भी आवश्यकता है जो अंततः भारतीय एकात्मता को सुदृढ़ करे।